[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3404

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

सिने संगीत में शास्त्रीय प्रयोग

हरीश वर्मा
शोधार्थी
बरकतउल्ला वि.वि. भोपाल म.प्र.

संगीत के बिना भारतीय फिल्मों की कल्पना भी नहीं की जा सकती। भारतीय सिनेमा की पहचान उसका सषक्त संगीत ही है। भारतीय फिल्में चाहे वे किसी भी भाषा (अर्थात् हिन्दी, तमिल, बंगाली, मराठी, तेलुगु, कन्नड़ या मलयालम) की हों, संगीत उनमें प्रमुख होता है। क्षेत्रीय बोलियों जैसे भोजपुरी, राजस्थानी, बुंदेली, छत्तीसगढ़ी आदि में बनने वाली फिल्मों में तो संगीत ही उनका मूल तत्व होता है। भारत में सर्वाधिक फिल्में हिन्दी भाषा में बनती हैं जो विश्व भर में लोकप्रिय होती हैं। अतः आगे हम भारतीय फिल्मों की चर्चा हिन्दी फिल्मों को केन्द्र में रखकर ही करेंगे।

भारतीय संगीत का आधार शास्त्रीय संगीत ही है। जैसा कि हम जानते हैं कि भारत में शास्त्रीय संगीत की दो प्रमुख शैलियाँ हैं।

- पहली उत्तर–भारतीय संगीत शैली अर्थात् हिन्दुस्तानी संगीत
- दूसरी दक्षिण–भारतीय संगीत शैली अर्थात् कर्नाटक संगीत।

परन्तु भारतीय फिल्मों में दोनों ही संगीत शैलियाँ के भरपूर प्रयोग हुए हैं। भारतीय फिल्मों का कथानक प्रायः भावना प्रधान होता है। प्रत्येक फिल्म की कहानी में विभिन्न भावनाओं का समावेष होता है। उन्हीं भावनाओं को व्यक्त करने में शास्त्रीय संगीत महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। इस भूमिका का निर्वहन दो प्रकार से होता है।

- (अ) शास्त्रीय संगीत पर आधारित गीत
- (ब) शास्त्रीय रागों पर आधारित फिल्म का पार्ष्व संगीत।

भारतीय फिल्मी गीतों की जो मूल धुन होती है वह किसी न किसी शास्त्रीय राग को आधार मानकर या किसी लोक धुन को आधार मानकर बनाई जाती है। फिर उसे वाद्यवृंद द्वारा सजाने का कार्य किया जाता है। वाद्यवृंद भारतीय एवं पाष्चात्य दोनों प्रकार का होता है। परन्तु गायक द्वारा गायी जाने वाली मूल धुन का आधार प्रायः शास्त्रीय संगीत ही हाता है, भले ही उसे शास्त्रीय ढंग से न गाया जा रहा हो।

भारतीय संगीत में समय सिद्धांत के अनुसार राग गायन की परम्परा रही है। जिसका एक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक दृष्टिकोण है। सुबह, दोपहर, शाम, रात्रि, मध्यरात्रि आदि समय के अनुसार रागों के गायन की अलग–अलग विशेषतायें हैं। इसी प्रकार विशेष ऋतुओं में गाये जाने वाले राग एवं विभिन्न भागों को व्यक्त करते हुए रागों की अपनी अलग–अलग विशेषतायें हैं। इसी तरह विभिन्न ताल एवं उनकी मात्रायें तथा लय आदि से वातावरण निर्माण की सतत् क्रिया की जाती है। अतः चित्रपट की कहानी के भावों को ध्यान में रखते हुए शास्त्रीय संगीत की सहायता से गीतों का निर्माण किया जाता है।

इसी प्रकार फिल्म के पार्ष्व संगीत में भी अभिनेता के भावों को व्यक्त करने का कार्य भी शास्त्रीय संगीत द्वारा किया जाता है, या हम कहें कि अभिनेता का आधा अभिनय पार्ष्व संगीत द्वारा ही हो जाता है तो अतिष्योक्ति नहीं होगी।

सिने संगीत में शास्त्रीय संगीत को लेकर किसी एक परम्परा का निर्वहन नहीं होता। यह एक मुक्त प्रकार का संगीत होता है। उदाहरण के लिए – 'किसी एक गीत की मूल धुन कर्नाटक शैली के किसी राग पर आधारित है, एवं गायक भी उसी शैली के अनुरूप स्वरों में उतार–चढ़ाव लेते हुए गायन कर रहा है परन्तु ताल में उत्तर–भारतीय ताल बजायी जा रही है एवं वाद्य के रूप में तबले का प्रयोग किया जा रहा है जो कि एक उत्तर–भारतीय वाद्य है। जबकि कर्नाटक संगीत में ताल के लिए मृदंगम या पखावज का उपयोग होता है।' इस प्रकार का संगम बहुतायत में देखने का मिलता है।

इसके अलावा कम्प्यूटर के आगमन के पश्चात् अब संगीत का सृजन विभिन्न सॉफ्टवेयरों द्वारा किया जा रहा है। तो शास्त्रीय संगीत को पाश्चात्य संगीत के मिश्रण द्वारा फ्यूजन बनाकर प्रस्तुत करना आसान हो गया है एवं ऐसा अधिकतर किया जा

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

रहा है। जिसमें शास्त्रीय संगीत शैली का शुद्ध तराना या खयाल ले लिया जाता है एवं ताल के लिए पाश्चात्य शैली का उपयोग किया जाता है एवं साथ में पाश्चात्य हार्मनी भी चल रही होती है। इस प्रकार के शास्त्रीय गीत आजकल फिल्मों में खासे चर्चित हो रहे हैं। उदाहरण के लिए – आओगे जब तुम साजना, (जब वी मेट), ओरे पिया...., (आजा नच ले), मोरा पिया मोहे बोलत नाहीं (राजनीति), अलबेला सजन आयोरी (हम दिल दे चुके सनम) आदि।

हिन्दी चित्रपट संगीत के प्रारम्भ में तो फिल्मों में संगीत देने के लिए शास्त्रीय गायकों ने ही अपना योगदान दिया है। उस समय चूँकि फिल्मों में पार्श्व गायन की शुरूआत नहीं हुई थी, अतः अभिनय हेतु भी उन लोगों को चुना जाता था जिन्हें थोड़ा शास्त्रीय संगीत का ज्ञान हो एवं गला भी अच्छा हो। क्योंकि फिल्मांकन के समय ही गाना भी रिकॉर्ड होता था। उस समय वाद्ययंत्र जैसे तबला, सारंगी आदि बजाने वालों को सेट पर ही आस–पास छिपा दिया जाता था ताकि वे दिखायी न दें। लेकिन उनके साज की आवाज पूरी सुनायी दे, सिर्फ जो गा रहा है वही दिखाई दे। उदाहरण के लिए – कुंदनलाल सहगल, पंकज मलिक, तिमिर वरन आदि ऐसे ही कुषल गायक एवं अभिनेता थे। जिन्हें अभिनय के साथ शास्त्रीय संगीत का भी ज्ञान था। इसके भी पूर्व जब फिल्में बोलती नहीं थी, तब थियेटर में फिल्म के प्रदर्षन के समय, शास्त्रीय गायकों एवं वादकों को अनुबंधित किया जाता था तथा वे ही अपने गायन एवं वादन के माध्यम से फिल्म की कहानी को आगे बढ़ाते एवं भाव प्रर्दषन में सहयोग देते थे। कालांतर में जब फिल्मों में पार्श्व गायन एव पार्ष्व संगीत की शुरूआत हो गई, तब शास्त्रीय संगीत में निपुण लोग ही संगीतकार बनते गये। जैसे – नौषाद, अनिल विष्वास, श्यामसुंदर, सी. रामचन्द्र, रामलाल, रोषन, शंकर–जय किशन, दत्ताराम, बसंत देसाई, एस.डी. बर्मन, मदनमोहन, कल्याण जी आनंद जी, आर.डी. बर्मन, लक्ष्मीकांत–प्यारेलाल आदि। जिन्होंने किसी न किसी गुरू के सानिध्य में शास्त्रीय संगीत की शिक्षा ली थी। इसके अलावा संगीत विद्यालयों से निकले लोग भी संगीतकार बन रहे थे, जिन्हें शास्त्रीय संगीत की पूर्ण जानकारी होती थी। मेरिस म्यूजिक कॉलेज, लखनऊ से कई गुणी संगीतज्ञ निकलकर फिल्मों में संगीत निर्देषक बने जिनमें मदनमोहन का नाम उल्लेखनीय है जिन्होंने शास्त्रीय संगीत पर आधारित कई मधुर धुनों की रचना की।

अब हम विभिन्न रागों पर आधारित हिन्दी चित्रपट के कुछ गीतों की चर्चा करेंगे –
फिल्मी गीतों में रागों पर आधारित गीतों की बात करें तो भैरवी राग का भरपूर उपयोग हुआ है। जैसे – बरसात फिल्म के तो सभी गीत ही भैरवी राग पर आधारित हैं। इसके अलावा फिल्म बेजू बावरा का 'तू गंगा की मौज में.....', के. एल. सहगल द्वारा गाया हुआ 'बाबुल मोरा...', फिल्म शोला और शबनम का रफी–लता का गाया हुआ 'जीत ही लेंगे बाजी हम तुम....' से लेकर ए.आर. रहमान का फिल्म 'दिल से' का 'जिया जले, जान जले.....' तक।

राग भैरवी पर आधारित कुछ प्रमुख गीतों की सूची इस प्रकार है –

क.	गीत के बोल	फिल्म का नाम	गायक कलाकार
1	छोड गये बालम	बरसात	मुकेश और लता
2	फुल गेंदवा ना मारो	दूज का चॉद	मन्ना डे
3	लागा चुनरी में दाग	दिल ही तो है	मन्ना डे
4	दुनिया बनाने वाले	तेरी कसम	मुकेश

इसी प्रकार राग शिवरंजनी में भी मधुर रचनायें विभिन्न संगीतकारों ने दी हैं। जैसे – शंकर–जयकिशन ने 'बहारो फूल बरसाओ....', जाने कहाँ गये वो दिन...', संसार है एक नदिया.... आदि। लक्ष्मीकांत–प्यारेलाल ने 'तेरे मेरे बीच में कैसा है ये बंधन....', हेमंत कुमार ने 'कहीं दीप जले कहीं दिल...' एवं आर.डी. बर्मन ने 'मेरे नैना सावन भादो...' जैसी अत्यंत कर्णप्रिय रचनाये दी हैं जो बहुत लोकप्रिय हुई।

राग शिवरंजनी पर आधारित प्रमुख फिल्मी गीतों की सूची –

क.	गीत के बोल	फिल्म का नाम	गायक कलाकार
1	जाने कहॉ गये वो दिन	मेरा नाम जोकर	मुकेश
2	ओ साथी रे	मुकद्दर का सिकंदर	लता किशोर
3	तेरे मेरे बीच	एक दुजे के लिए	लता और एस. पी. बाला सुब्रमण्यम
4	ओ मेरे सनम	संगम	लता मुकेश

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

राग बागेश्वरी पर आधारित प्रमुख फिल्मी गीतों की सूची –

क्र.	गीत के बोल	फिल्म का नाम	गायक कलाकार
1	तुने ओ रंगीले	कुदरत	लता
2	आ जा रे परदेषी	मधुमती	लता

राग विहाग पर आधारित प्रमुख फिल्मी गीतों की सूची –

क्र.	गीत के बोल	फिल्म का नाम	गायक कलाकार
1	मीठे बोल बोले	किनारा	लता और भुपेन्द्र
2	जिंदगी का सफर	आपकी कसम	किशोर कुमार
3	ये क्या जगह दोस्तो	उमराव जान	आशा

राग भैरव पर आधारित प्रमुख फिल्मी गीतों की सूची –

क्र.	गीत के बोल	फिल्म का नाम	गायक कलाकार
1	किसी नजर को तेरा	एतबार	आशा और भुपेन्द्र
2	अलबेला सजन आयो	हम दिल दे चुके सनम	लता और राशिद खान

राग भीमपलासी पर आधारित प्रमुख फिल्मी गीतों की सूची –

क्र.	गीत के बोल	फिल्म का नाम	गायक कलाकार
1	दिल में तुझे बिठा कर	फकीरा	हेमलता
2	समय धीरे चलो	रूदाली	भुपेन्द्र हजारीका

राग भूपाली पर आधारित प्रमुख फिल्मी गीतों की सूची –

क्र.	गीत के बोल	फिल्म का नाम	गायक कलाकार
1	चंदा है तु	आराधना	लता
2	देखा है ख्वाब	सिलसिला	लता और अमिताभ

राग दरबारी कान्हड़ा पर आधारित प्रमुख फिल्मी गीतों की सूची –

क्र.	गीत के बोल	फिल्म का नाम	गायक कलाकार
1	ओ दुनिया के रखवाले	बैजूबावरा	रफी
2	तोरा मन दर्पण	काजल	आशा

राग देस पर आधारित प्रमुख फिल्मी गीतों की सूची –

क्र.	गीत के बोल	फिल्म का नाम	गायक कलाकार
1	चली कोन से देष	बुटपालीश	तलत मेहमुद और लता
2	हम तेरे प्यार में सारा	दिल एक मंदिर	लता मंगेशकर

राग जयजयवंती पर आधारित प्रमुख फिल्मी गीतों की सूची –

क्र.	गीत के बोल	फिल्म का नाम	गायक कलाकार
1	तेरे मेरे सपने	गाइड	रफी
2	मन मोहना बडे झुठे	सीमा	लता मंगेशकर

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

राग जौनपुरी पर आधारित प्रमुख फिल्मी गीतों की सूची –

क्र.	गीत के बोल	फिल्म का नाम	गायक कलाकार
1	टुटे हुये ख्वाबो में	मधुमती	रफी
2	मेरी याद में तुम	मदहोष	तलत

राग काफी पर आधारित प्रमुख फिल्मी गीतों की सूची –

क्र.	गीत के बोल	फिल्म का नाम	गायक कलाकार
1	एलो मै हारी पिया	आरपार	गीता दत्त
2	जलते हे जिसके लिये	सुजाता	तलत

राग केदार पर आधारित प्रमुख फिल्मी गीतों की सूची –

क्र.	गीत के बोल	फिल्म का नाम	गायक कलाकार
1	हम को मन की शक्ति	गुडडी	वाणी जेराम
2	आप यू ही अगर	एक मुसाफिर एक हसीना	आशा एवं रफी

इस प्रकार भारतीय शास्त्रीय संगीत पर आधारित गीतों की अच्छी खासी श्रंखला हिन्दी फिल्म संगीत में मिलती है। राग यमन में भी फिल्मी गीतों की संख्या अत्यधिक है जिनकी अच्छी खासी सूची बनाई जा सकती है। फिल्मी गीतों में अधिकतर यमन कल्याण का प्रयोग देखने मिलता है। चाहे पुरानी फिल्मों के गीत हों या नई फिल्मों के, यमन कल्याण राग का उपयोग प्रत्येक कालखण्ड में होता रहा है।

इसके अलावा कुछ कम प्रचलित रागों पर आधारित गीत भी फिल्म संगीत में देखने को मिलते हैं जैसे –
राग चारूकेशी में 'इक तू जो मिला...', राग पलासी में 'कभी तन्हाइयों में हमारी याद आयेगी....', राग बसंत मुखारी में 'ओ बसंती पवन पागल....', राग सिंध भैरवी में 'अजहु न आये बालमा.....', राग किरवानी में 'मेरी भीगी भीगी सी पलकों पे.....' एवं 'याद न जाये बीते दिनों की....', राग मधुवंती में 'रस्मे उल्फत को निभाये तो निभायें कैसे...', राग नंद में 'तू जहाँ–जहाँ चलेगा. ....', राग पटदीप में 'मेघा छाये आधी रात....', राग भटियार में 'जय नंदलाला....' एवं कर्नाटक संगीत के राग हंसध्वनि में 'तुम बिन जीवन कैसे बीता....' आदि अनेकों उदाहरण हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दी सिने संगीत में शास्त्रीय संगीत का प्रयोग प्रारम्भ से ही होता चला आ रहा है। हालांकि विभिन्न कालखण्डों में पाष्चात्य संगीत की अलग–अलग शैलियों ने फिल्म संगीत पर अपना प्रभाव डाला एवं फिल्मसंगीत में परिवर्तन होता रहा, परन्तु शास्त्रीय संगीत की मूल अवधारणा जो पहले थी वह अब भी कायम है। यही कारण है कि आज बनने वाले पूर्णतः पाष्चात्य संगीत शैली पर आधारित गीत, अधिक दिनों के मेहमान नहीं होते, वे सिर्फ क्षणिक उत्तेजना हेतु युवा वर्ग द्वारा कुछ ही समय के लिए पसंद किये जाते हैं। परन्तु शास्त्रीय संगीत शैली निबद्ध रचनायें, भले ही वे मिश्रित पाष्चात्य हार्मनी के साथ हों लम्बे समय तक एवं सभी आयु वर्गों द्वारा पसंद किये जाते हैं। अतः स्पष्ट है कि भारतीय सिने संगीत में शास्त्रीय का योगदान प्रारम्भ से है एवं भविष्य में हमेशा रहेगा।

संदर्भ–

1 *रागों पर आधारित फिल्मी गीतों की सूची के संदर्भ*
2 *www.swarganga.org./hindisongs.php*
3 *www.indiapicks.com/hindi/raga_index.htm*